समकालीन साहित्‍ में जनवादी का धारा के संवर्धन में ऋतुराज कं कविताओं के योगदान का मूल्यांक

हिंद में पीएचडी कं उपाधि हेतु

शोध प्रस्ताव

निर्देशक

निरुपमा हर्षवर्धन

शोधार्थ

नरेंद्र कुमार

मानवीर्क एवं समाज विज्ञान विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्याल , जयपुर (राज.)

1.प्रस्तावि शोध विषय का संक्षिप्त परिच :-

20वं सदी कई अथ में नए युग का सूत्रपा करने वाली सिद्ध हु । इस सदी में ऐसी अनेक क्रांति घटनाए घटित हु कि इसने अपने से पूर्ववर्त सदियं को कई गुना पीछे धकेल दिया। यह सदी ब आयामी वर्चस्ववा तथा कई मिथकों को तोड़कर नए मिथक गढ़ने वाली रही है।बीत शताब्दि में शु हु साम्राज्यवादी डायनासोर बीसवं सदी में दो-दो महायुद को झेलते हु परा हु । अभूतपूर्व प्रौद्योगिकी उपलब्धि के बीच इस सदी में अनेकानेक नवीन आविष्क हु । वस्त यह सदी विभिन्न धाराओं कं प्रयोगशाला के रू में रही। विश्व र पर अमेरिक , रू , जापान चीन, फ्रां जैसी नई आर्थिक राजनीति शक्तियो का उदय हु ।

रू में हु साम्यवा क्रांति ने तो मनु जीवन के सभी संबंधं (आर्थिक, सामाजि व राजनीति) में आमूलचूल परिवर्त कर दिया। इस क्रांति ने साहित के स्वर को तो पूरा ही बदल दिया। रू में साम्यव के उत्थ से साहित में एक युग 'प्रगतिवा युग' का उदभव हु । साम्यवा क्रांति ने आम आदमी को साहित के केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया। रू क्रांति ने न केवल रू साहित को प्रभावित किया अपितु इसने पूरे विश्व साहित को प्रभावित किया है। हिंद साहित में भी रू साम्यव (लाल रू) के गुणगान में बहु कुछ लि खा गया। हिंद के प्रगतिवा साहित में गरीब, मजद , किसानों, स्त्रियों अर्था सर्वहारा वर्ग कं दुर्दशा उनके शोषण कारक का चित्रण होने लगा।

यह वह समय था जब भारत सदियं पुराने गुलामी कं बेड़ियों को तोड़ने का प्रया कर रहा था। अंततः एक साम्राज्यवा शोषणवादी स के चंगुल से आजाद हु । दो शताब्दि के शासन में अंग्रेज ने सोने कं चिड़िय कहलाने वाले भारत को एक कंगाल, बेरोजगार, दिन-हीन भारत में तब्दी कर दिया।

भारत में प्राकृति आपदा, अकाल, भुखमरी, महामारी एवं स कं दमनकारी नीति से जनता में हाहाकार मचा हु था। हिंद के प्रगतिवा कवियं ने उसी जनजीवन के यथार्थ का चित्रण अपनी कविताओं में किया। सूर्यकां त्रिपाठ निराला, नागार्जुन, केदारनाथ अ वाल, मुक्तिबो , रामविलास शम , धूमिल, बालकृ शम नवीन, भगवती चरण वम , रामधारी सिं दिनकर, त्रिलोचन आदि कवियं में अपनी कविताओं के माध से तथा प्रेमचंद, रेणु, जैनेंद्र, यशपाल, भी साहनी, राजेंद्र यादव आदि साहित्यकारों ने अपने कथा साहित के माध्यम से सामा जन-जीवन का यथार्थ चित्रण किया।

प्रगतिवा का धारा एक आंदोलन माना जा सकता है जिसमें का के माध से आम जन के दु-दर्द [illegible] लिए लोगं में [illegible] प्रया [illegible] प्रगतिव [illegible] किसानों [illegible] मजदूरों [illegible]

स्वतंत्र में विकसित मध वर्ग की -, सत्रांस की -मजद हासि | इसकी किसनों मजदूरों आंदोलनों में | कवियों ग्रा चित्र हैं | किंत व स्थिति रेखांकन प्रति ज्याद |

सातवें उत्तरार्द्ध नवें हिंदी में स्प रू - हैं | लोगों लोगों साहित बहिष् लोगों - की स्वायत्त दुनिया | प्रेम, रति मृत शाश्वत विषयों लिख का शि अतं दुर्बोध | वर्ग मूल्यों अभिरुचि प्रभावित परिचालित |

दूसरे कवियों जिनका चरित्र मध्यवर्गी | राजनीति, मार्क्सवाद सामा प्र सहानुभूति कवियों की सामाजिक वर्गीय स्थिति को सुरक्षित व्यवस , अन्याय अत्याचार लिए रू में लिए लोगों प्रतीकात्मक सामाजिक संघर्ष यथार्थ अमूर्तीकरण | व्यापक संघर्ष प्रश्नों मध्यमवर्गी परिवार - व्यक्ति - दुख की में सिमट सिकुड़ |

कवियों तत्काल संघर्ष उ स क्रू दोनों में | कवियों मजदूर किसानों की परिस्थितियों संघर्ष कें बिंदु |

हिंदी की इनकी | कवियों की चिंत का व का रू की दृष्टि से इनमें काफी रिश्ता - इनकी ल स्वभ की दृष्टि भिन्न |

नक्सलव जरि प्रक किसानों मजदूरों राजनीति केंद्र में पुनर्स्थापित क्रांति की की शां प्रक हिंदी की कवियों में उनकी रचनात्म की कवियों किसानों की सच्चाइयों सामाजिक-राजनीतिक आर्थिक संदर्भ में व्यक्त की | जरिए वर्ग लिए शक्तियों सत्ता में लिए किसानों नहीं बदस | स्वातंत्र्योत्तर किसानों नेह की असलियत वास्तविक कारुणिक चित्र -

कहाँ ?

कहाँ ?

की की

की बाँट हुए

लिए सिर्फ कर

कहाँ हैं ?

जुझारू सत्ता की की क्रूरता निर्भीकता हैं | व्यवस्था प्रति आक्रोश आक्रामक गुस्से आक्रोश हिंदी प्रदान हैं | दुःखों तकलीफों मु कारणों की वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में हैं | शुरुआत हैं विचारों विद्रोह शब्दाडंबर विद्रोह सरोकार की | आत्मसंघर्ष आत्मप्रद स्थितियों से संघर्ष क्रांतिकारी की पांडेय की स्वप्न आशापूर्ण -

यादें में

जुबानें हैं यादें में

यादें में

दीवारों में चिने हुए

प्या

अत्याचारों

मुठभेड़ हैं |

यहां

मृत्युग्रस्त सपनों में

उम्मीं

सत्ता व्यवस्था की क्रूरता चित्र बहु हैं | भारतें लेखकों अंग्रेजों की नीति कार्यवाहियों | प्रतिवादी कवियों साम्राज्यवादी शक्तियों मु र |आठवें की में व्यवस्था द्वारा नक्सलब विद्रोह लिए जुल्मों अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह |सत्ता व्यवस्था पूर्ण वह चुप अनुपस्थि | किंतु ( ) कवियों सत्ता दुःस्व की | ' ' ' पाश' की संदर्भ में हैं -

सत्ता सम दमनात्म शा इस्तेम में विद्रोह की स्व ख नहीं शिका पृष्ठभूमि में | रोजमर्रा जिंदगी में संघर्ष सत्ता मानसि लिए हैं | व हथियार हैं |आखिरकार करेंगे, जिनमें वह बंदूकें , हैं, हैं खेतों में खलिहानों में, सड़कों में, गलियों में |

□□□□ की □□□□□ संघर्ष □□□□ □संबं□द्धर □□ □□□□□□ कवियं की □□ क्रांतिकार आस्थावार की □ □ □□□□□ □□ □ □ □□ □प्रभा में □नितांत □□□□□□ □ □□□□□□ □□□□□□ में □□ □□□शब्द □□ □□□ में नहं □□□□□□ निश्चय □□□ हैं |□□□श □□□□□□□ □□□□ की उर लिए □□□ हैं

श □□□□हैं □□

शब में □□□□ □□□□ □ □श में □□ □□□□ □□□□ □□|

हिंदं □□□□□ में □□□ □□□□□ □□□□□ की □□□□ □कवियं, □□□□प्रगतिशी □□ □□ □□ परिवर्तन □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□|

□□□□ की '□□□□□' □□□□ □□□□ की '□□□□-□□□□' सर्वेश्वर द□□□ □क्से की 'कुआनं □□□' □□□□□□ □□□□ की '□□□□ □□□□ □'□□ □ □□□□□□□ सिं की □□ □□□ की □□□□□□□□□ □□□ □ □संदर्भ की □□□□□□ हैं |□□□□प्रगतिशीलों में नागार्जुन की '□□□□□' त्रिलोचन की '□□□□ □□□□' □□□□□□□ अग्रवार □□□□□ □ □ □□□□□की □□□ □□□□□□□□□ □□□ की □□□□□□ हैं | □□□□□□ कवियं में □□□□ □□□□, विजेंद्र, नरें □□, □□□□□□ सलिल, □□□□□□, इब्ब रव □ □ □□□□□ की □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □ □संघर्ष □□□□□□चि प्रस्तुत □□□□ हैं |

□□ □□□ □□□□ □□कवियं □□ □□ □□□ □□□ □जिन्हें आर □□ □□ □□ □□□□ में नहं □□□□ □□□□ □किंर □□ □□□□रचनाकर्म की दृष्टि □ □□□□□ □व्यापक □□□□□□ □□□□ □□□□हा हैं |

□□□□□□ कवियं □किसानों, मजदूरों, □□□ □, औरत, दलितों 3□ □वंचितों □□ उनकी वास्तुगत सच्चाइयों □ □सर □□□□□ □□□अंतर्विरोध के रू में □□□ □ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □ □व्यापक संघर्षशील दृष्टि से परिपूर्ण चित्र प्रस्तुत □□□□ | □□□□ पांडेर की '□□□□ □□□ की औरतें' □ □□□ धर की 'बूनं की बेटियां' □ □'□□□□ हु लड़कियं' □□□□ □□□□ की 'ब □□□ □□ □□ □□ हैं' □ □□□□□ की 'कन्याद '□□□□□' '□□ □□ नहं रहेंगे' 'छात्रावास में का □□□' '□□□ ग्राम' 'म □□ दु□' □□ संदर्भ में □□□□□□ □□□□□□□ हैं |

नहं □□□□□ □□□ □□□

झूठं मुठभेड़ □□□□□ □□

नौजवानं कीं हत्य □□□□ हैं

□ □घर में □□□□□□ □□ □□□ □□□□

[illegible]

'[illegible]' के [illegible] में [illegible] 'नागार्जुन' उन [illegible] हैं जह नौजवान के [illegible] हत्याकांड [illegible] 'कलकत 71' लिखक हजार [illegible] म [illegible] खामोशमांअ के चीखें [illegible] हैं [illegible], [illegible] रू उनके [illegible] में [illegible] के वास्तविकत [illegible] गिरफ्तारियां, कत - [illegible] कर्फ्यू [illegible] लोकतं [illegible] झांकत [illegible] के सच्च [illegible] कवियं [illegible] यह निर्भीकता [illegible] प्रक [illegible]।

[illegible] देह [illegible] के [illegible]

करोड़ अशांत सिरों वे [illegible]

[illegible]।

[illegible] में [illegible] कवियं के [illegible] अ में [illegible] जिन में [illegible], विजेंद्र, नरें [illegible], [illegible], [illegible], इब्ब रव, [illegible] श्रीराम [illegible] प्रमुख [illegible]। जिन्हों [illegible], परिवा, बच्चों [illegible] औरतं के त्रासद स्थितियं [illegible] लिए जिम्मेद पितृसत्तात्मक, [illegible], [illegible], साम्राज्यवादी [illegible] उपभोक्तावाद [illegible] संबंधं [illegible] हुा [illegible] र्ष पूर्ण रू के अभिव्य के [illegible]।

[illegible] म

[illegible] के [illegible] लिए

[illegible] म के त्व [illegible]

नारियत के रस्सियों के [illegible] त [illegible]।

[illegible] कवियं [illegible], [illegible], मृत, संत्रास [illegible] निरर्थकता के [illegible] प्रति आस्थ [illegible] विश्वास [illegible] र प्रबत [illegible]।

[illegible], मध्यमवर्गीय विद्रूपताओं [illegible] निराशापूर्ण [illegible] खिलाफ सामाजित [illegible] के निश्चित स्वा [illegible] हैं [illegible] में [illegible] लोकतं धज्जियां [illegible]।

[illegible] में [illegible] के [illegible] समस्या [illegible] लिए क्रांति [illegible] आह्व [illegible] हैं। उनके [illegible] द्रोह [illegible] क्रांति क [illegible]। उनके [illegible] 'रास्त' [illegible] प्रक [illegible] व्यवस्थ [illegible] स [illegible] रास्त [illegible]।

[illegible] लोकतं[illegible] की [illegible] राजनीति[illegible] चाल[illegible] [illegible] की [illegible] चिंत[illegible] [illegible]हो [illegible] हैं -

उन्हों[illegible] [illegible], [illegible], नदिय[illegible], [illegible]

हथिय[illegible] लिए हैं,

[illegible] में [illegible] मु[illegible]

[illegible] लिए [illegible]

[illegible] प्रक[illegible] [illegible] की [illegible] सम[illegible] फलक[illegible] [illegible] हो [illegible] व्याप[illegible] यथार्थ [illegible] व्य[illegible] [illegible]

2.प्राकल्पन :-

हिंद[illegible] साहित्[illegible] में [illegible] कवियों [illegible] काव्यों में [illegible] में व्य[illegible] लिंग [illegible], जाति [illegible], मजदू[illegible], किसानों [illegible] प्रति [illegible], [illegible], सर्वहारा [illegible], [illegible]- [illegible] व्यक्ति[illegible] [illegible] प्रति सहानुभूतिपूर्वक अभिव्य[illegible] की [illegible]

[illegible] कवियों [illegible] काव्यों में [illegible], [illegible], मजदू[illegible] [illegible] अ[illegible] वर्ग [illegible] यथार्थ चित्रण [illegible] उन्हों[illegible] का[illegible] [illegible] यथार्थ चित्रण [illegible] अ[illegible] [illegible] लोगों [illegible] की समस्या[illegible] [illegible] यथार्थ चित्रण [illegible], विजेंद्र, [illegible] प्रका[illegible] [illegible] अ[illegible] कवियों [illegible] की [illegible], संत्रास, [illegible] चित्रण [illegible] का[illegible] में [illegible]

[illegible] प्रका[illegible] [illegible] कवियों [illegible] द्वारा साहित्[illegible] की [illegible] परिवर्तित परिस्थितियों तथा नए सामाजिक, राजनीतिक [illegible] आर्थिक परिवेश [illegible] दबाव [illegible] स्वतंत्र स[illegible] [illegible] हैं | [illegible] प्रत्येक वर्ग [illegible] हैं [illegible] पश्चगाम[illegible] [illegible] हैं |

□□ '□□□□□□□ का में □□□□□□ का □□□□ :- □□ मूल्यां (□□□□ □□□□□□ संदर्भ में) □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ उद्देश्य □□ □□ काव्यों में □□□-□□□□□□ लोगं □□□□□□ □□ यथार्थ □□ □□□□□ □□| यथार्थ कं □□□□□□ □□ स्पष्ट □□□□ हु का □ यथार्थ □□ □□□□ स्पष्ट □□□□ □□| □□□□□ □□□ कं □□□□□□ □ इसकं पृष्ठभूमि □□ प्रक □□□□ हु □□□□□□ □□□□□ □□□□□, □□ □ अधिकार □ साहित्य में उनकं अभिव्यं □□ प्रक □□□□ □□

3.प्रा सामग्र का विश्लेषण :-

प्राय विश्व □□□□ □□ समाजं में □ □□□, मजदू , किसानों □ प्र उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण □□□ □□| इसलिए मध्य वर्ग □ निम्न वर्ग □□□□□□ प्रवृत्ति □□ □□□□□ □□□ हु □□□□ □□□□ □ हासिये □□ □□□□ □□□□ □□□ □□| यद्यं प्लेट , मा , गांधं , □□□□□ □□ दार्शनिक □ □ □□□□ चिंतकों □□□□□ □□ वर्गहीन □□□□ हु □□□□□□ कं स्थापन □□ □□ □□□□ □□|

प्रगतिवाद □□ उपरांत हिंदं का में □ □□□ □□ का □□□□ □□□□□□| □□□ कवियं □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□□□ □□| जिनमें □□□□ □□□, विजेंद्र, □□□ प्रका □□□□□□ प्रमुख हस्त □□□□ □□ □□□□ हैं | □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □ □□□ □□ □□□□□ □□| □□ □ का में □ □□□ कं □□□□, □□□□, □□□, सत्रां □ □□□□ □ मुक्ति कं □□□□□□□ □□| □ लोकतं □□ □□□□ □ मुक्ति □□ □□□□ □□□□□□□□□ लोकतं □□□□ □ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□| □□□□ कं 'सेवाग्राम' □□□□□ लोकतं □□□□□□□ कं □□□□□ □□| □□ □□□□□ में लोकतं □ प्रहर □□□□□□ □ साधनं □□ □□ सत्त लोलुप □□□□□□□ □□□ कं □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□| □□ रू □□□□□ □ मुक्ति □□ □□ □□ □□ दि -भि □□ □□□ | □□□□ कं '□□□□' □□□□□ □□□□ □□□ कं □□□□□ □□| इसमें □□□□ कं □□□□ □□ निर्भरता व □ बेखूफी □□□□ □□| □□□ '□□□□□' □□□□□ में लोकतं कं □□□□□□ □ मजदूरों कं □□□□ □ □ उनकं यथार्थवादी दृष्टि व □ व्यव □□□□ □□| 'पांव □□□□□□' □□□□□ श्रमिक □□□□ कं □□□□ □□□□ दस्ता □□| □□ श्र कं महत्त □□ स्वीका □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ यु □□□□□ □□|

हिंदं में □□□□□□ □□□□□ कं □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ शोधकं कं दृ □□□ सर्जनात्मक रू कं □ □ नहं □□ | □□□ □□□ □□ ध्यान में □ □ □ हु मैंने □□□ प्रस्तावित '□□□□ □□ □□-□□.□□ □□□ □ लिए □□□ □□ □□□ □□□ मौलिक □□ विनम्र प्रयास □□□

4.अध्य का मह :-

साहित्‍ य में साहित्‍ व्यक्ति के रोजमर के जिंदग में नहं | प्रभावित | साहित्‍ तात्कालिक चित्रण व्यक्ति प्रभावित | साहित्यका स क्रांति नहं क्रांति का मार्ग प्रशस्‍ अवश | में के समस्य , , साहित्‍ साहित्यका के जिम्मेदारी |

दृष्टि से प्रबं मूल्यव निष्कर्ष प्राप्त होंग जिनक मह प्रका .

साहित्यिक मह -

1. का के प्रबुद्ध परिचित हो सकेंगे

2. द्वारा रचित साहित्‍ प्रति प्रबुद्ध पाठक के रुचि |

3. के निष्पक्ष मूल्यां

4. मौलिक शोध के अ शोधार्थियों को ध्यान आकृ |

.सामाजिक मह -

1. सामाजिक विभिन्न सामाजिक आर्थिक राजनीतिक संदर्भ व्यापक रू |

2. साहित्‍ के मुख्यध का मह |

.-राष्ट्रीय मह :-

1. राष्ट्रीय मह राष्ट्र के विभिन्न समस्या साहित्‍ केंद्र ब |

2. साहित्‍ माध्‍ राष्ट्रीय समस्या -विमर्श रास्त |

5. प्रमु शोध प्रविधिः-

□□ □□□□ □व्यापक स □□□ □□□□□□ □लिए □□□□□□ □□□ प्रविधियाो□ □□ प्रयो □□□□ □□□□□ |

1.□□□□□□ □□□ □□□□ □साहित्य □□ अध्यय □□□□ □□□□□ |

2. □□□□□□□ कवियं में □□□□□□ साहित्य □□ अध्यय □□□□ □□□□□ |

3.□□□□□□□ साहित्य □□ अध्यय □□□□□लिए साहित्यिक प -पत्रिकाओ □□ अध्यय □□□□ □□□□□ |

4. □ □□□□ □□□ □□□□ □व्यक्तिग संपर्क □□□मौलिक साम □□□ □□ □□ □□□□□□□ प्रयाग □□□□ □□□□□ |

5.अ□ालो साहित्य □□ अध्यय □□□□□लिए विभिन्न विश्वविद्याल , सार्वजनिक पुस्तकालयों □ प्रकाशकों द्वारा प्रकाशि साहित्य □□ अध्यय □□□□ □□□□□|

6. उपर्युक्त □□□□ □□ □ध्यय □□□□□□□□□□विद्वानों, लेखकों □□ आलोचकों □व्यक्ति साक्षात्कार अनुसूचियां ए□प्रश्नावली के माध्य □त एकत्रि □□□ □□□□□|

7.साहित्यिक गोष्ठियों सम्मेलन □ □□ में □□□ □□□□ त □□□□ □□□□□|

8. साहित्य □□□□□□□□□ □लिए प्रयुक्त प्रचलित □□□ वैज्ञानिक □□□ प्रविधियों द्वारा □□□ □□ अंतिम रू □□□□ □□□□□ |

9. विश्लेषणात्मक अध्यय पद्धति □□ □□□□□हुए वर्णनात्मक □□□ □□ प्रयो □□□□ □□□□□ |

6.प्रस्ताविा शोध विषय का अध्यायीकरण :-

1. प्रथ अध्यार -परिचर □ परिस्थितियां

(□) परिचर :- 1. □□□□□□□ □□□□□ - अर्थ, परिभाष

2. □□□□□□□ □□□□□ र्के विभिन्न का □□□□□

3. □□□□□□ □□□□□ - अर्थ परिभाष

(□) परिस्थितियां-1. समका□□□ सामाजिव परिस्थितियां

2. □□□□□□□ राजनीतिव परिस्थितियां

3. □□□□□□□ आर्थिक परिस्थितियां

4. □□□□□□□ साहित्यिक परिस्थितियां

5 □□□□□□□ धार्मिव परिस्थितियां

2. द्वितीय अध्यार -

(□) □□□□□□ का □□□□ □प्रमुर □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ परिचर

(□) □□□□□□ □□□ □□□□ :- □□ परिचर

1.व्यक्तित्व

2.कृतित्व

3.□□□□ अध्याय -□□□□ व □□ विश्लेषण

(□) □□□□□□ का में □□□□□ का □□□

1.□□□□ व

2.विश्लेषण

3.□□□□

(□) □□□□□ का □□□ में □□□□

1. □□□□ के □□□□□ □□□□

2. □□□□□ का में □□□□ □□ मह

4.चतुर्थ अध्याय -□□□□□ का में यथार्थ □□□□

1. व्यक्तिगत यथार्थ □□□□

2. पारिवारिक यथार्थ □□□□

3.सामाजिक यथार्थ □□□□

4.आर्थिक यथार्थ □□□□

5.राजनीतिक यथार्थ □□□□

6.धार्मिक यथार्थ □□□□

7. दलित यथार्थ □□□□

8. सांस्कृतिक यथार्थ □□□□

5. □□□□ अध्य □-□□□□□ □अ □□□□□□ कवियं □□ तुलनात्म अध्यर

6.□□□□□□□

7.संदर्भ ग्रंथ सूची-

(□) आलो □ □□□ ग्रंथ

1. में □□□□□□- 1904 □□□□□□□ प्रकाश □□□□ □□□□ □□□□□

2 □□ □□□ धर्म □□अ 1967 राजस्था साहित □□□□□□ □□□□□

3.□□□□□ □□□□ व -1970 □□□□□□□ प्रकाश □□□□ □□□□ □□□□□

4. □□□□□ - 1982 □□□□□□□ प्रकाश □□□□ □□□□ □□□□□

5. □ □□ □□□ □□□ -2007 □□□□ प्रकाश दिल्ल

6.□□ □□□□ □□ □□□□ □ □□□□□ □□□□

7. □□□ □□□□□□ -□□□ प्रका

8.बच्चों कं दुनिया -□□□□ □□□□

9.□□□ □ □□□ नहं - □□□□ □□□□

10.त्रास -विजेंद्र

(□) □□□□□ ग्रंथ -

1.□□□□ □□□□□□□□□ - विश्वनाथ प्रसा तिवारं -□□□□ प्रकाश दिल्ल -1987

2.साहित □□□□□□□□□ □□□□□□ -□□□ सिंह □□□□□ - पीपु लिटरेर्स - दिल्ल - 1982

3.उत्त □ □□□□□ साहित्यिक विमर्श - □□□□ □□□□□- □□□□ प्रकाश □□ दिल्ल - 2006

4. □ □□□ □ हिंदं □□□□□□ साहित्र -अर्जुन चाव्हाण - □□□□ कृ प्रकाश दिल्ल

5.हिंदं साहित्र □□ इतिहास - □ रामचं शु हिंदं

6.साहित्र □□ इतिहास -□□. नगें

7. □ □□□ □ हिंदं साहित्र □□ इतिहास - □□. बच सिंह

8. हिंदं साहित्र □□ दूसर इतिहास -□□. बच सिंह

9 हिंदं साहित्र □□ संवेदनात्म इतिहास - □□. रामस्वरूप चतुर्वेदी

10. □ □ □□ हिंदं साहित्र - □□□□□□ □ □ दृष्टि - □□. □□□ □□□□ मिश्र

11. □ □□□ □ सामाजिव □□□□□□ □ □ □ □□□ □ हिंदं साहित्र -□□. कृ □□□□□□ मिश्र

12. हिंदं साहित्र : □□ □ □ प्रवृतियां - डॉ. शिव □□□□□ शम

13. □ □□□ □ □□□ साहित्र □ □ मनोविज्ञान - □□. □□□□□ उपाध्याय

14. □ □□□ □□□ □□□ □ आधुनिकीकरण -□□. □□□□□ □□□□

15. □ □□□ □□□ □ □□□□□□□ □□□□ संदर्भ - □□ नगेंद्र

16. □□□□ मू □ □ साहित्र - □□. धर्मवीर □□□□□

17. □□□ साहित्र : □□प्रभा - □□. □□□ दुला □□□□□□

18. □□□□□□□□□□ □ □ □ □□□ □ हिंदं - □□. □□□□

19.□□□□□□□ □□□□□ □ □ □□□□□□□□□□ - □□□ तिवारी

20. हिंदं □□□□□ के □□□□□ □□□□ - □□□□ □□□□

21.□□ □□□□□ □ □ अस्तित्व - □□. □□□□□□□□ शम

22.□□□□□ □□□□ प्रतिम - □□. □□□□□ सिं

23.दूस □□□□□ कं □□□ - □□. □□□□□ सिं

(□) शब्दको -

1. हिंद अंग्रेजी शब्दको - □□. □□□□ □□□□□- □□□□□□ प्रकाश

2. □□□ हिंद शब्दको - □□. □□□□ □□□□□ - □□□□□□ प्रकाश

3. हिंद साहित □□□ - □□. धीरेंद्र वम - ज्ञान □□□ प्रकाश

4. आदर्श हिंद शब्दको - □□.□□□□□□□□ गु - □□□ प्रकाश

5. हिंद □□□□□ □□□ - □□. □□□□□□□ तिवार